कंचन कुमारी
अतिथि शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

21) कामायनी - जयशंकर प्रसाद इड़ा सर्ग

अभिशाप्त प्रतिध्वनि हुई लीन
नभ सागर के अंतस्तल में जैसे छिप
जाता महा मीन
मृदु मरुत लहर में फेनोपम तारागण
झिलमिल हुए दीन
निस्तब्ध मौन था अखिल लोक तंद्रालस
था वह विजन प्रांत
रजनी तम पुंजीभूत सदृश मनु श्वास ले रहे
थे अशांत
वे सोच रहे थे " आज वही मेरा अदृष्ट
बन फिर आया
जिसने डाली थी जीवन पर पहले अपनी
काली छाया
लिख दिया आज उसने भविष्य । यातना
चलेगी अंतहीन
अब तो अवशिष्ट उपाय भी न । "

व्याख्या – कामदेव के शाप का तीव्र स्वर अचानक शून्य में इस तरह विलीन हो गया, जिस प्रकार सागर के मध्य कोई बड़ी मछली ऊपर प्रकट होकर नीचे उसके तल में आकर छिप जाती है और बड़ी मछली के सागर में डुबकी

लेने पर जिस प्रकार लहरों के साथ-साथ झाग उठने लगते है, उसी प्रकार नभ में वायु के कोमल झोंको के साथ-साथ तारकगण मंद-मंद टिमटिमाते हुए दृष्टिगोचर होने लगे। उस समय रात्रिवेला होने के कारण सकल दृष्टिगोचर होने लगे। उस समय सृष्टि में नीरवता छाई हुई थी और सारस्वत प्रदेश भी (यह निर्जन प्रदेश भी) आलस्यमय हो रहा था। उस निस्तब्ध सारस्वत प्रदेश में विश्राम करते हुए मनु रात्रि के गहन अंधकार की तरह व्याकुल होकर श्वाँसे ले रहे थे और विचार कर रहे थे कि आज वही काम मेरे भाग्य के रूप में फिर यहाँ प्रकट हो गया। और कुःस्वप्न प्रभाव डाला था क्योंकि मैं तो श्रद्धा को स्वीकार करने के लिए उत्सुक नहीं था क्योंकि मैं तो श्रद्धा को स्वीकार करने के लिए उत्सुक नहीं था किन्तु इसी ने मुझे प्रलोभन वश कर श्रद्धा को अपनाने की आकांक्षा मेरे हृदय में उत्पन्न की थी। इसी काम ने वासना को भी हृदय में जागृत किया और

आज वही ऐसा भयानक भविष्य अंकित करने हेतु यहाँ पुनः आ गया। अब तो मुझको जीवन भर दुःख एवं यातनाएँ वहन करनी पड़ेगी। मेरे पास छुटकारा पाने का कोई भी उपाय शेष नहीं है।